

II. समग्र मांग

2010-11 की पहली तिमाही के व्यय पक्ष में वृद्धि के प्रेरक निजी उपभोग और निवेश व्यय का लगातार प्रभुत्व दर्शाते हैं। पूंजीगत माल उत्पादन, कंपनियों की पूंजी व्यय योजनाएं, तेल से भिन्न आयात, कर्ज में वृद्धि और गैर-बैंकिंग स्रोतों से वित्तपोषण की हाल की प्रवृत्ति दर्शाती है कि निवेश व्यय के प्रेरकों में मजबूती आई है। व्यय पक्षीय जीडीपी आंकड़े और कंपनियों की बिक्री तथा उपभोक्ता टिकाऊ माल के उत्पादन की प्रवृत्ति निजी उपभोग व्यय में तेजी दर्शाती है। नीति में राजकोषीय समेकन और राजस्व घाटे में दिखे सुधार पर बल देने के बावजूद, सरकारी व्यय ने पिछले वर्ष की तुलना में मजबूत वृद्धि दर्शाई है। खरीफ 2010-11 के दौरान कृषि उत्पादन में सुधार से निजी व्यय बढ़ने की संभावना है।

देशी मांग

II.1 भारत की वृद्धि के प्रेरक लगातार देशी ही बने हुए हैं। इससे न केवल देशी वृद्धि पर वैश्विक मंदी का असर सीमित रखने में मदद मिली है बल्कि तेज और मजबूत सुधार सुनिश्चित हुआ है। वृद्धि को प्रेरित करने वाले मुख्य कारक और मध्यावधि में उनकी मजबूती जीडीपी के व्यय पक्ष से देखी जा सकती है। बाजार मूल्य पर वास्तविक जीडीपी 2010-11 की पहली तिमाही में 10 प्रतिशत बढ़ी जो कारक लागत पर वास्तविक जीडीपी के संबंध में दर्ज 8.8 प्रतिशत की वृद्धि से अधिक थी। बाजार मूल्य पर वास्तविक जीडीपी में उच्च वृद्धि अधिक निवल परोक्ष कर दर्शाती है।

II.2 असंगठित स्तर पर, निजी अंतिम उपभोग व्यय में वृद्धि (पीएफसीई) 2010-11 की पहली तिमाही में थोड़ी बढ़ी। खरीफ मौसम 2010-11 के दौरान कृषि उत्पादन में सुधार से यह अपेक्षित है कि ग्रामीण मांग और निजी उपभोग व्यय बढ़ सकता है। सरकारी अंतिम उपभोग व्यय (जीएफसीई) दो तिमाहियों तक मंद रहने के बाद 2010-11 की पहली तिमाही में तेजी से बढ़ा। 2010-11 की पहली तिमाही में हुई वृद्धि केंद्र सरकार के राजस्व व्यय में हुई वृद्धि के अनुरूप है (चार्ट II.1 और सारणी II.1)।

II.3 सकल स्थिर पूंजी निर्माण (जीएफसीएफ) के रूप में निवेश वृद्धि में 2010-11 की पहली तिमाही में कमी आई जबकि 2009-10 की तीसरी तिमाही में उसमें तेजी आई थी और अंतिम तिमाही में यह तेजी और बढ़ गई थी। इसे दर्शाते हुए, जीडीपी में सकल स्थिर पूंजी निर्माण का हिस्सा कम हो गया क्योंकि निजी उपभोग व्यय का हिस्सा बढ़ने से समायोजन हो गया था। फिर भी, निजी उपभोग व्यय

और सकल स्थिर पूंजी निर्माण बाजार मूल्य पर वास्तविक जीडीपी में वृद्धि के प्रमुख प्रेरक थे (चार्ट II.2)।

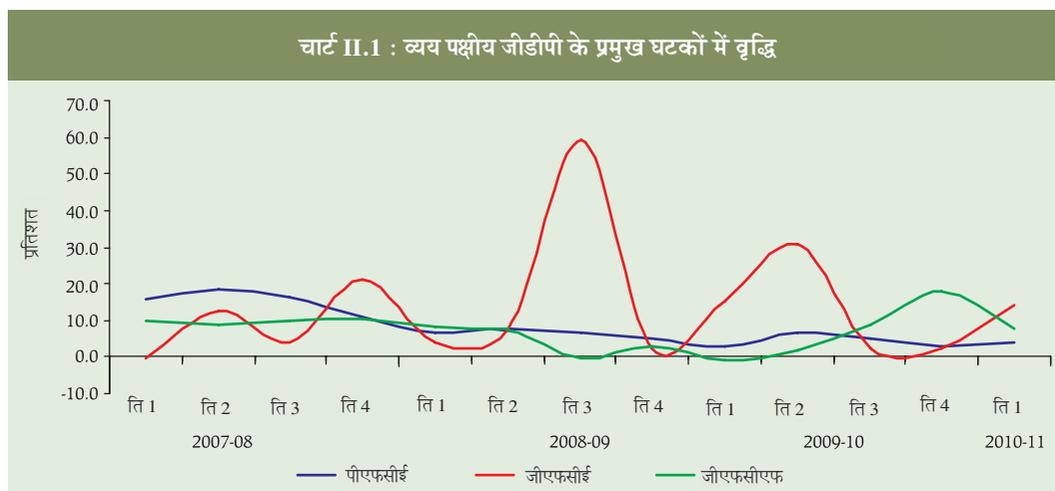
II.4 किंतु, 2010-11 की पहली तिमाही में सकल स्थिर पूंजी निर्माण में कमी आइएपी में पूंजीगत माल घटक के संबंध में देखी गई तेजी की प्रवृत्ति से कुछ विपरीत दिखती है।

राजकोषीय नीति के माध्यम से मांग प्रबंधन

केंद्र सरकार के वित्त

II.5 आर्थिक सुधार का प्रभाव दर्शाते हुए, राजकोषीय प्रोत्साहन उपाय आंशिक रूप से वापस लेने और 3 जी स्पेक्ट्रम तथा ब्रॉडबैंड वायरलेस एक्सेस (बीडब्ल्यूए) नीलामी की प्राप्तियों से केंद्र सरकार के वित्त की स्थिति में काफी सुधार हुआ क्योंकि राजस्व घाटा (आरडी) और सकल राजकोषीय घाटा (जीएफडी) निरपेक्ष संदर्भ में और बजट अनुमान के अनुपात के रूप में पिछले वर्ष की

चार्ट II.1 : व्यय पक्षीय जीडीपी के प्रमुख घटकों में वृद्धि

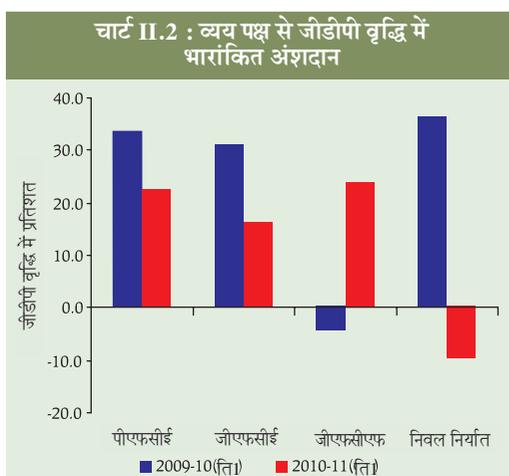


सारणी II.1: व्यय पक्षीय जोडीपी (2004-05 की कीमतों पर)

मद	2008-09*	2009-10#	2009-10				2010-11
			(प्रतिशत)				
			ति1	ति2	ति3	ति4	
1	2	3	4	5	6	7	8
वृद्धि दरें							
बाजार मूल्यों पर वास्तविक सकल देशी उत्पाद कुल उपभोग व्यय	5.1	7.7	5.2	6.4	7.3	11.2	10.0
(i) निजी	8.3	5.3	4.7	9.6	4.8	2.6	5.5
(ii) सरकारी	6.8	4.3	2.9	6.4	5.3	2.6	3.8
सकल अचल पूंजी निर्माण	16.7	10.5	15.3	30.5	2.5	2.1	14.2
स्टॉक में बदलाव	4.0	7.2	-0.7	1.6	8.8	17.7	7.6
निवल निर्यात	-61.2	5.9	-0.9	4.2	8.7	11.1	7.0
	40.2	-9.7	-27.4	6.1	-0.3	-113.4	20.5
सापेक्ष हिस्सा							
कुल उपभोग व्यय	70.9	69.4	71.4	71.5	73.4	62.3	68.4
(i) निजी	59.5	57.6	59.9	60.1	60.4	51.1	56.5
(ii) सरकारी	11.5	11.8	11.5	11.3	13.1	11.2	11.9
सकल अचल पूंजी निर्माण	32.9	32.8	31.2	33.2	31.9	34.6	30.5
स्टॉक में बदलाव	1.3	1.3	1.3	1.4	1.3	1.3	1.3
निवल निर्यात	-6.1	-5.1	-4.8	-8.7	-6.7	0.4	-5.2
ज्ञापन	(रुपय करोड़)						
बाजार मूल्य पर वास्तविक जोडीपी	4,465,360	4,807,222	1,099,653	1,125,257	1,242,858	1,339,454	1,209,888
* : त्वरित अनुमान # : संशोधित अनुमान.							
टिप्पणी: सारणी में प्रमुख मदें ही शामिल होने से आंकड़े 100 से मेल नहीं खाएंगे।							
स्रोत: केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय।							

इसी अवधि की तुलना में काफी कम हो गया (चार्ट II.3 और सारणी II.2)।

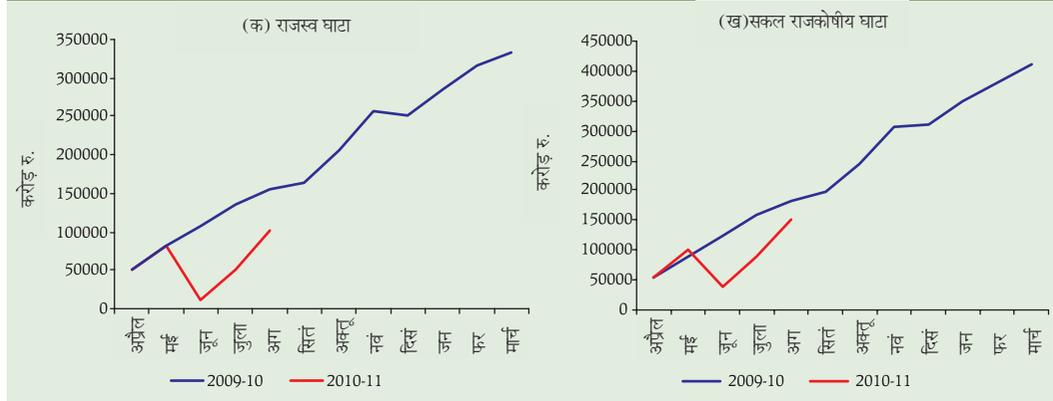
II.6 2010-11 के दौरान अब तक (अप्रैल-अगस्त) के द्र सरकार के वित्त में सुधार राजस्व प्राप्तियों



(85.0 प्रतिशत) में वृद्धि से स्पष्ट था जिसे कर और करेतर राजस्व की सहायता प्राप्त थी। सकल कर राजस्व 2009-10 कर दौरान दर्ज तेज गिरावट (11.6 प्रतिशत) के विपरीत तेजी से बढ़ा (27.3 प्रतिशत) जो निहित आर्थिक सुधार और परोक्ष कर कटौतियां आंशिक रूप से वापस लेना दर्शाता है।

II.7 प्रत्यक्ष कर वसूली ने अप्रैल-अगस्त 2009-10 की तुलना में 13.8 प्रतिशत वृद्धि दर्ज करते हुए अप्रैल-अगस्त 2010-11 के दौरान काफी सुधार दर्शाया। जहां कंपनी कर वसूली 18.4 प्रतिशत बढ़ी, वहीं निजी आय कर वसूली 14.0 प्रतिशत बढ़ी। इसके अलावा, जून 2010 में 3 जी/बीडब्ल्यूए स्पेक्ट्रम नीलामी से प्राप्त राजस्व से सरकारी वित्त पर दबाव कम होने में मदद मिली।

चार्ट II.3 प्रमुख घाटा संकेतक



II.8 अप्रैल-अगस्त 2010-11 के दौरान, राजस्व और पूंजीगत व्यय में वृद्धि 2009-10 की इसी अवधि की तुलना में अधिक थी। कुल व्यय में वृद्धि (39.2 प्रतिशत) का कारण योजना व्यय में हुई वृद्धि था। 2010-11 में अब तक (अप्रैल-अगस्त) केंद्र ने 2010-11 के

बजट का 40.4 प्रतिशत कुल व्यय पहले ही कर लिया है (चार्ट II.4)।

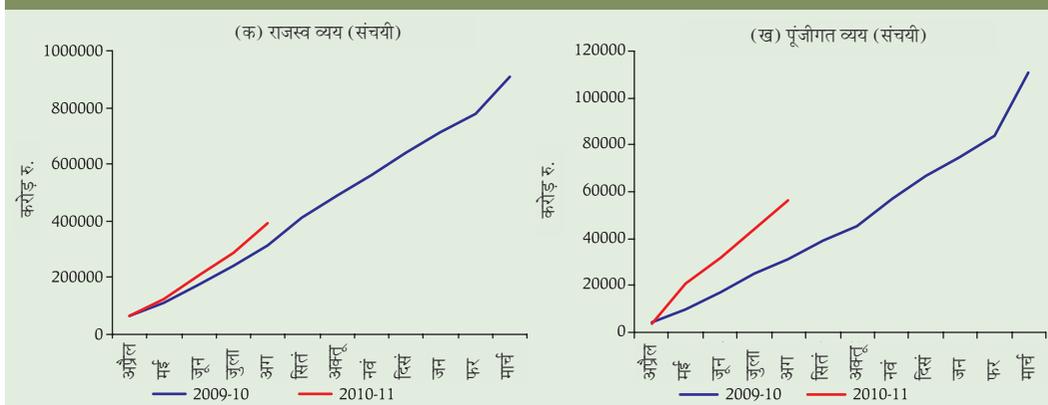
II.9 सरकार द्वारा शुरू किए गए राजकोषीय प्रोत्साहन ने भारत में आर्थिक मंदी की अवधि और विस्तार को सीमित रखा। वृद्धि की संभावना में सुधार और वृद्धि की

सारणी II.2 केन्द्र सरकार के वित्त : अप्रैल-अगस्त 2010-11

पद	अप्रैल-अगस्त (करोड़ रु.)		वर्ष के लिए बजट आकलनों के प्रतिशत		वृद्धि दर (प्रतिशत)	
	2009	2010	2009-10	2010-11	2009-10	2010-11
1	2	3	4	5	6	7
1. राजस्व प्राप्तियां	1,57,198	2,90,799	25.6	42.6	-2.7	85.0
i) कर राजस्व(निवल)	1,06,837	1,38,500	22.5	25.9	-14.8	29.6
ii) करेतर राजस्व	50,361	1,52,299	35.9	102.8	39.6	202.4
2. ऋणोत्तर पूंजीगत प्राप्तियां	3,835	5,479	71.7	12.1	218.8	42.9
3. योजनेतर व्यय	2,45,275	3,11,249	35.3	42.3	27.1	26.9
जिसमें से:						
i) ब्याज भुगतान	72,133	85,621	32.0	34.4	9.6	18.7
ii) रक्षा	41,129	45,395	29.0	30.8	65.8	10.4
iii) प्रमुख सब्सिडी	54,193	54,738	51.1	50.2	4.7	1.0
4. योजनागत व्यय	98,048	1,36,454	30.2	36.6	13.2	39.2
5. राजस्व व्यय	3,12,283	3,91,151	34.8	40.8	20.4	25.3
6. पूंजीगत व्यय	31,040	56,552	25.1	37.7	53.6	82.2
7. कुल व्यय	3,43,323	4,47,703	33.6	40.4	22.8	30.4
8. राजस्व घाटा	1,55,085	1,00,352	54.9	36.3	58.4	-35.3
9. समग्र राजकोषीय घाटा	1,82,290	1,51,425	45.5	39.7	56.0	-16.9
10. समग्र प्राथमिक घाटा	1,10,157	65,804	62.8	49.6	115.8	-40.3

स्रोत: महालेखापरिक्षक, वित्त मंत्रालय।

चार्ट II.4 केंद्र सरकार के व्यय की प्रवृत्तियां



गति बनाए रखने के लिए राजकोषीय समेकन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार ने बजट 2010-11 में घोषित किए अनुसार क्रमिक राजकोषीय निर्गम योजना का सहारा लिया। 2010-11 में राजस्व प्राप्तियों में तेज वृद्धि का कारण परोक्ष कर की दर कटौती वापस लेना और 3 जी/बीडब्ल्यूए स्पेक्ट्रम नीलामी से प्राप्त राजस्व है। नीलामी के आगम के वन-ऑफ स्वरूप को देखते हुए, समेकन की प्राथमिकता मात्रा और गुणवत्ता के संदर्भ में जारी रह सकती है। राजकोषीय समेकन पथ पर टिकाऊ प्रगति करने की दृष्टि से यह वांछनीय होगा कि राजस्व वसूली बढ़ाने हेतु और आवर्ति व्यय को उपयुक्त बनाने के लिए किए गए उपाय निरंतर आधार पर अपनाए जाए जिसमें योजनेतर राजस्व व्यय कम करने पर विशेष ध्यान दिया जाए।

राज्य वित्त

II.10 राज्य सरकारों ने देशी आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 2009-10 में अतिरिक्त व्यय और कर कटौतियों के संदर्भ में विभिन्न उपाय किए।

परिणामस्वरूप, तीन वर्ष के अंतराल के बाद राजस्व घाटा पुनः उभरा। राजकोषीय अनुशासन की आवश्यकता को पहचानते हुए, राज्यों ने 2010-11 में राजकोषीय समेकन की प्रक्रिया का सहारा लिया। जीडीपी के अनुपात के रूप में राजस्व व्यय 2009-10 (आरई) के 13.6 प्रतिशत की तुलना में 2010-11 (बीई) में 13.4 प्रतिशत पर कम रहने का अनुमान है। उच्च स्व-कर राजस्व और केंद्रीय करों में हिस्से के आधार पर राज्यों को 2010-11 (बीई) में अधिक राजस्व की अपेक्षा है। तदनुसार, 2010-11 में राज्य सरकारों का राजस्व घाटा और सकल राजकोषीय घाटा कम रहने का अनुमान है।

संयुक्त राजकोषीय स्थिति

II.11 2010-11 के लिए अनुमानित केंद्र और राज्य सरकारों के संयुक्त वित्त पर एक नजर डालने से पता चलता है कि जीडीपी के प्रतिशत के रूप में मुख्य घाटा संकेतक 2009-10 के उच्च स्तर की तुलना में कम होंगे (सारणी II.3)। परिकल्पित राजकोषीय समेकन राजस्व प्राप्तियों में काफी वृद्धि से प्रेरित होगा जबकि व्यय वृद्धि

सारणी II.3: मुख्य राजकोषीय संकेतक				
(सकल देशी उत्पाद का प्रतिशत)				
वर्ष	प्राथमिक घाटा	राजस्व घाटा	सकल राजकोषीय घाटा	बकाया देयताएं*
1	2	3	4	5
केंद्र				
2008-09	2.6	4.5	6.0	56.7
2009-10 संअ	3.2	5.3	6.7	56.4
2010-11 बअ	1.9	4.0	5.5	56.9
राज्य #				
2008-09	0.6	-0.2	2.4	26.2
2009-10 संअ	1.6	0.8	3.4	26.2
2010-11 बअ	1.0	0.4	2.9	26.1
संयुक्त				
2008-09	3.4	4.3	8.5	72.0
2009-10 संअ	4.8	6.0	10.0	72.5
2010-11 बअ	3.0	4.4	8.3	73.6

संअ : संशोधित अनुमान. बअ : बजट अनुमान.
* : बाह्य देयताओं को ऐतिहासिक विनिमय दर पर शामिल किया गया है।
: 27 राज्य सरकारों के बजट दस्तावेजों पर आधारित.
नोट: घाटा मानकों के सामने घटाव का संकेत अधिशेष को दर्शाता है।

कम की जाएगी। वृद्धि के संदर्भ में और जीडीपी के प्रतिशत के रूप में कुल व्यय पिछले वर्ष की तुलना में कुछ कम होगा। कर कटौती वापस लेने और आर्थिक वृद्धि बढ़ने के कारण कर वसूली की वृद्धि में सुधार होने की अपेक्षा है।

कंपनी निष्पादन

II.12 कंपनी क्षेत्र के निष्पादन में समग्र आर्थिक गतिविधियों में सुधार देखा गया। निजी कंपनी कारोबार क्षेत्र की बिक्री में काफी सुधार हुआ जिसमें 2010-11 की पहली तिमाही के दौरान 24.2 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) वृद्धि हुई (सारणी II.4)। बिक्री में उच्च वृद्धि आंशिक रूप से कम आधार प्रभाव दर्शाती है पिछले वर्ष

सारणी II.4 : कंपनी क्षेत्र का वित्तीय निष्पादन									
(प्रतिशत में वृद्धि दर/ अनुपात)									
मद	2008-09				2009-10				2010-11
	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1	ति2	ति3	ति4	ति1
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
कंपनियों की संख्या	2500	2386	2486	2561	2530	2531	2562	2565	2546
बिक्री	29.3	31.8	9.5	1.9	-0.9	0.1	22.5	29.1	24.2
अन्य आय*	-8.4	-0.6	-4.8	39.4	50.2	6.0	7.4	10.3	-21.2
व्यय	33.5	37.5	12.6	-0.5	-4.4	-2.5	20.6	30.7	29.0
मूल्यहास प्रावधान	15.3	16.5	16.8	19.6	21.5	20.7	21.6	20.1	19.9
सकल लाभ	11.9	8.7	-26.7	-8.8	5.8	10.9	60.0	36.7	8.2
ब्याज भुगतान	58.1	85.3	62.9	36.5	3.7	-1.0	-12.3	-2.9	26.9
कर के बाद लाभ	6.9	-2.6	-53.4	-19.9	5.5	12.0	99.3	44.0	2.4
चुनिंदा अनुपात									
बिक्री के प्रति स्टॉक में बदलाव #	2.9	2.2	-1.7	-1.8	0.6	2.3	0.8	1.1	2.9
बिक्री के प्रति सकल लाभ	14.5	13.5	11.0	13.7	15.7	14.9	14.3	14.6	13.9
बिक्री के प्रति करोत्तर लाभ	9.7	8.6	5.3	8.1	10.2	9.4	8.8	9.0	8.6
बिक्री के प्रति ब्याज	2.4	2.9	3.8	3.2	2.8	3.1	2.7	2.4	2.9
सकल लाभ के प्रति ब्याज	16.8	21.5	34.6	23.3	18.0	20.5	19.1	16.6	21.1
ब्याज कवरेज (गुना)	6.0	4.6	2.9	4.3	5.6	4.9	5.2	6.0	4.7

* : स्पष्ट सूचना होने पर अन्य आय में असामान्य आय / व्यय शामिल नहीं किया गया।
: स्पष्ट रूप से व्यापाराधीन स्टॉक में बदलाव सूचित करने वाली कंपनियों के लिए।
नोट: 1. वृद्धि दरें वर्ष सामान्य सेट वाली कंपनियों के लिए पिछले वर्ष की तुलना में संदर्भाधीन अवधि में प्रतिशत परिवर्तन का प्रतिशत परिवर्तन हैं।
2. प्रत्येक अवधि में शामिल किए गए नमूने की संख्या और संरचना में अंतर होने के कारण हो सकता है कि तिमाही आंकड़े वार्षिक आंकड़ों से मेल न खाएं।

की पहली तिमाही में आर्थिक गतिविधियों में कमी बनी रही जिसमें बिक्री लगभग सपाट थी और लाभ वृद्धि कम थी। क्रमिक रूप से, 2010-11 की पहली तिमाही के दौरान बिक्री में 2009-10 की चौथी तिमाही की तुलना में कमी आ गई हालांकि 2009-10 की चौथी तिमाही की तुलना में मौसमी रूप से समायोजित बिक्री में 1.9 प्रतिशत वृद्धि हुई।

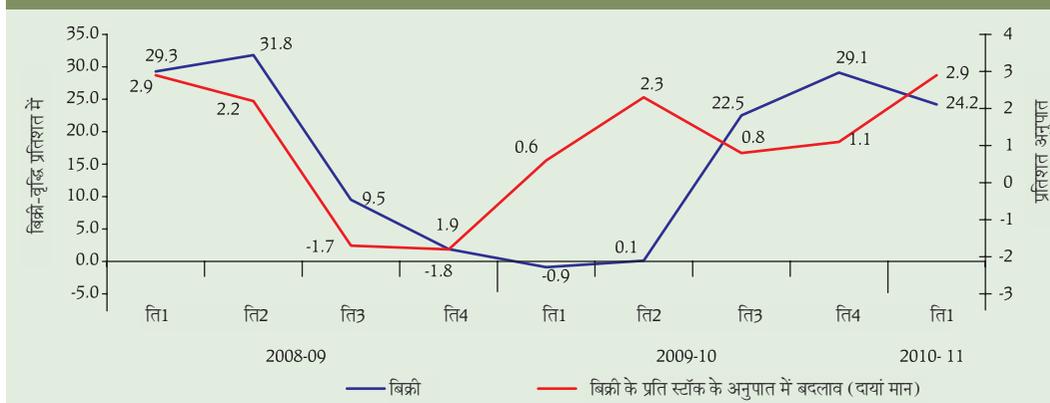
II.13 विक्रेय माल में परिवर्तन, जो पहली तिमाही में सामान्यतः शीर्ष के करीब रहता है, 2010-11 की पहली के दौरान बिक्री का 2.9 प्रतिशत था (चार्ट II.5)। विक्रेय माल-बिक्री अनुपात में परिवर्तन में वृद्धि से पता चलता है कि कंपनियां अधिक मांग की अपेक्षा में अपना माल बढ़ा रही हैं। तिमाही के दौरान स्टॉक संचय में वृद्धि चीनी उद्योग को छोड़कर बढ़कर 3.3 प्रतिशत हुई। बिक्री में तेज वृद्धि के कारण, स्टॉक-बिक्री अनुपात में परिवर्तन में वृद्धि से पता चलता है कि तिमाही के दौरान स्टॉक में काफी वृद्धि हुई जो उस तिमाही में मजबूत समग्र जीडीपी और औद्योगिक वृद्धि का सहायक कारक हो सकता है।

II.14 निवेश की मजबूत इच्छा स्पष्ट थी जो कंपनियों के परिकल्पित उच्च पूंजी व्यय में दिख रही थी जिन्होंने अप्रैल-जून 2010 के दौरान वित्तीय सहायता के लिए बैंकों/वित्तीय कंपनियों से संपर्क किया था। 2010-11 की पहली तिमाही में, बैंकों/वित्तीय कंपनियों ने 87 परियोजनाओं को 99,998 करोड़ रुपए की सहायता स्वीकृत की जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 35 परियोजनाओं को 30,116 करोड़ रुपए की सहायता स्वीकृत की गई थी।

बाह्य मांग

II.15 2009-10 की चौथी तिमाही से भिन्न, जब निवल निर्यात ने व्यय पक्ष में वास्तविक जीडीपी वृद्धि में सकारात्मक योगदान दिया था, 2010-11 की पहली तिमाही के दौरान निवल निर्यात का योगदान नकारात्मक बन गया क्योंकि आयात वृद्धि निर्यात वृद्धि से अधिक थी (चार्ट II.2)। जबकि निर्यात वृद्धि कमजोर और अनिश्चित वैश्विक आर्थिक वातावरण से प्रभावित थी, वहीं आयात के संबंध में देशी आर्थिक गतिविधियों की गति बढ़ रही थी

चार्ट II.5 : बिक्री में वृद्धि और बिक्री के प्रति स्टॉक के अनुपात में बदलाव



II.16 सारांश के रूप में, निजी उपभोग व्यय तेज हो गया किंतु इसमें और वृद्धि होनी चाहिए ताकि जीडीपी में स्व-टिकाऊ मजबूत वृद्धि को सहायता मिल सके। राजकोषीय समेकन की प्रक्रिया जारी रहने के बावजूद, सरकारी व्यय वृद्धि की लगातार सहायता कर रहा है जो राजस्व और पूंजी व्यय में उच्च वृद्धि दर्शाता है। पूंजीगत माल के उत्पादन संबंधी उपलब्ध आंकड़े अस्थिर होने के बावजूद, कंपनियों की पूंजीगत व्यय की योजनाएं वर्तमान

राजकोषीय वर्ष के दौरान निवेश व्यय में तेज गति दर्शाती हैं। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में धीमे सुधार की तुलना में भारत में उच्च वृद्धि दर्शाते हुए, समग्र मांग में निवल निर्यात का योगदान वर्ष के दौरान नकारात्मक रहने की संभावना है। समग्र रूप से, समग्र मांग की प्रवृत्ति गति की निरंतरता की ओर इशारा करती है, वहीं टिकाऊ मजबूत वृद्धि के लिए निवेश मांग का प्रमुख प्रेरक के रूप में उभरना आवश्यक है।